यीशु मसीह का पुनरुत्थान

फ्रैंकलीन के द्वारा

कुलुस्सियों 1:18 और वही देह, अर्थात कलीसिया का सिर है; **वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहलौठा** , कि सब बातों में वह **सर्वप्रथम** हो, केवल उसे **प्रमुख स्थान** मिले और वही **प्रधान** ठहरे।

वह **आरम्भ** था :

- बैतसैदा के कुंड पर 38 वर्ष से पड़े रोगी के लिए (यूहन्ना 5:2-17)
- यीशु के पास लाए गए उस लकवे के रोगी के लिए जो खाट समेत लाया गया था। (मत्ती 9:1-8)
- 12 वर्ष से लहू बहने के रोग वाली स्त्री के लिए (मत्ती 9:20-22)
- आराधनालय के अधिकारी के लिए जिसकी बेटी मर गयी थी (मत्ती 9:18, 23-26)
- उन दो अंधे मनुष्यों के लिए जिन्होंने अपनी दृष्टि पाई थी (मत्ती 9:27-31)
- दुष्टात्मा ग्रस्त मनुष्य के लिए जो बोल नहीं सकता था (मत्ती 9:32-33)

मत्ती 9:35-36 और यीशु **सब** नगरों और गांवों में फिरता रहा और उनकी सभाओं में उपदेश करता, और राज्य का **सुसमाचार प्रचार** करता, और हर प्रकार की **बीमारी और दुर्बलता** को दूर करता रहा। जब उसने भीड़ को देखा तो उसको लोगों पर **तरस** आया, क्योंकि वे उन भेड़ों के समान जिनका कोई रखवाला न हो, व्याकुल और भटके हुए से थे।

वह **आरम्भ** था :

दस कोढ़ियों के लिए जिन्हें चंगाई मिली (लूका17:11-20)

शतपति के सेवक के लिए जिसे चंगाई मिली (लूका 7:1-10)

विधवा के बेटे के लिए जो जिलाया गया (लूका 7:12-15)

लाज़र के लिए जिसे उसने मुर्दों में से जिलाया (यूहन्ना 11)

अंधे जन्मे व्यक्ति के लिए (यूहन्ना 9:1-7)

बरतिमाई के लिए जो दुबारा देखने लगा (मरकुस 10:46-52)।

लेकिन अब **शुक्रवार** का दिन था, यीशु को **बंदी** बनाया गया।

भीड़ चिल्ला रही थी : **इसे क्रूस पर चढ़ा!** क्रूस पर चढ़ा!

यूहन्ना 19:1-6, 14-18

पहले तीन घंटे यीशु क्रूस पर टंगा था - वह परमेश्वर का बलिदानी मेमना था, पवित्र और निर्दोष।

यह उत्कृष्ट प्रेम का उदाहरण है

I. **उसका पहला वचन - क्षमा**

लूका23:34 तब यीशु ने कहा, "हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।" और उन्होंने चिट्ठियाँ डालकर उसके कपड़े बाँट लिए। **प्रेम क्षमा करता है !**

लूका23:35-39 लोग खड़े-खड़े देख रहे थे, और सरदार भी ठट्ठा कर करके कहते थे: "इसने दूसरों को बचाया, यदि यह परमेश्वर का मसीह है, और उसका चुना हुआ है, तो **अपने आपको बचा ले।"** सिपाही भी पास आकर और सिरका देकर उसका ठट्ठा करके कहते थे, "यदि तू यहूदियों का राजा है, तो **अपने आप को बचा**!" और उसके ऊपर एक दोष-पत्र भी लगा था: "यह यहूदियों का राजा है।" जो कुकर्मी वहाँ लटकाए गए थे, उनमें से एक ने उसकी निंदा करके कहा, "क्या तू मसीह नहीं? तो फिर **अपने आप को और हमें बचा!"**

प्रेम क्रोधित नहीं होता। वह स्वयं को नहीं किन्तु दूसरों को बचाता है।

II. **प्रेम कभी छोड़ता नहीं, कभी त्यागता नहीं, हमेशा देता है।**

लूका 23:43 यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझ से सच कहता हूँ कि **आज** ही तू मेरे साथ स्वर्ग लोक में होगा।"

III. **प्रेम देता है - दूसरों की देखभाल करता है**

यूहन्ना 19:26-27 जब यीशु ने अपनी माता, और उस चेले को जिससे वह प्रेम रखता था पास खड़े देखा तो अपनी माता से कहा, **"हे नारी, देख, यह तेरा पुत्र है।"** तब उसने चेले से कहा, "यह तेरी माता है।" और उसी समय से वह चेला उसे अपने घर ले गया।

क्रूस पर अंतिम तीन घंटे यीशु: हमारे लिए पाप ठहरा: जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।

2 कुरिन्थियों 5:21

IV. प्रेम सहता है

मत्ती 27:46 तीसरे पहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, "एली, एली, लमा शबक्तनी?" अर्थात् "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, **तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?"**

वह आपके और मेरे लिए पाप ठहराया गया। और **हमारे पापों के कारण** वह सम्पूर्ण अनंतता में पहली बार अपने पिता से **अलग हुआ**। यशायाह 59:2

V. प्रेम अपनी ज़रूरतों से पहले दूसरों की ज़रूरतों को रखता है

यूहन्ना 19:28 इसके बाद यीशु ने यह जानकर कि अब सब कुछ पूरा हो चुका, इसलिये कि पवित्रशास्त्र में जो कहा गया वह पूरा हो, कहा, **"मैं प्यासा हूँ।"**

VI. प्रेम विजयी है - कभी असफल नहीं होता - मूल्य की चिंता किए बिना, वह अपना कार्य को पूरा करता है।

यूहन्ना 19:29-30 वहाँ सिरके से भरा हुआ एक बरतन रखा था, अतः उन्होंने सिरके में भिगोए हुए स्पंज को जूफे पर रखकर उसके मुँह से लगाया। जब यीशु ने वह सिरका लिया, तो कहा, **"पूरा हुआ"**; और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए।

VII. प्रेम परमेश्वर के प्रति समर्पित होता है और उसके प्रेममय हाथों पर पूरा भरोसा रखता है।

लूका 23:46 और यीशु ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा, "हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ।" और यह कहकर प्राण छोड़ दिए।

अतः सैनिकों ने आकर उन मनुष्यों में से पहले की टाँगें तोड़ी तब दूसरे की भी, जो उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए थे; परन्तु जब यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है, तो उसकी टाँगें न तोड़ीं। परन्तु सैनिकों में से एक ने बरछे से **उसका पंजर बेधा,** और उसमें से तुरन्त **लहू और पानी निकला।**

यूहन्ना 19:30, 32-34लूका 23:46

लूका 23:48-49 तब सारी भीड़ जो यह दृश्य देखने एकत्रित हुई थी, जो कुछ हुआ उसे जब देख चुकी तो अपनी छाती पीटती हुई लौटने लगी। उसके सब परिचित जन और वे स्त्रियां जो गलील से उसके साथ आई थीं, कुछ दूर खड़ी होकर यह सब देख रही थीं।

सब कुछ समाप्त हो गया वह मर गया - अब नहीं रहा - निराशा में

- शिष्य उलझन में थे/ रो रहे थे/ उनकी सारी आशाएं मिट गई थीं। वे डर के मारे छिपे हुए थे और डर रहे थे की कहीं उन्हें भी क्रूस पर न चढ़ा दिया जाए।

- सिपाही अपने स्थानों पर वापस पहुँच गए थे, उनका मनोरंजन समाप्त हो गया था।

- भीड़ और याजक एक दूसरे को बधाई दे रहे थे, क्योंकि जो उनके धर्म के लिए समस्या बन रहा था और जो उनकी बुराइयों को उजागर कर रहा था, उसे उन्होंने मार दिया था।

- सारी दुष्टात्माएं खुशियाँ मना रही थीं क्योंकि उन्होंने सोचा कि अच्छाई और बुराई की लड़ाई में उनकी बुराई की जीत हुई है।

(एक कविता)
परमेश्वर का पुत्र को शैतान आशा भरी नज़रों से देखता रहा - ले गए वे उसे कलवरी की ओर। कितनी ख़ुशी दुष्ट आत्माओं को मिली - उनके अजात शत्रु को काठ पर टाँग दिया।

और अधिक निश्चय शैतान को विजय का हुआ; जब हैरानी से उसने उस धर्मी को पाप से भरा देखा। मौत ने ज़िन्दगी को मजबूती से पकड़ा और उसे मारने के लिए आगे बढ़ा।

सृजनहार मर रहा है, उसकी रचना पर अंधकार और गड़बड़ी छाई थी। धरती कांप रही थी, चट्टानें टूट रही थीं, और शैतान के चेहरे पर कुटिल मुस्कान छाई थी।

लेकिन एक बार फिर, पाप से सशक्त होकर मौत ने सब पर राज किया, एक जुट होते वो, तो मज़बूत होते हैं वो। दुष्टात्माएं ख़ुशी से चिल्लाएं और शैतान का घमंड आसमान को छूए।

यह शुक्रवार का दिन था, सब कुछ समाप्त हो गया था।

- लगता था कि शैतान, पाप और मृत्यु की जीत हुई है।

शनिवार, सब्त का दिन। सब कुछ शांत था।

- शिष्य डर के मारे छिपे हुए थे।

जब वे दबी आवाज़ में, जो हुआ उसके बारे में बात कर रहे थे ...
तब उन्हें यीशु के कहे यह वचन याद आए :

"तीसरे दिन मैं मरे हुओं में से जी उठूँगा"

शायद... कल के लिए थोड़ी सी आशा थी।

रविवार - पुनरुत्थान का दिन आ पहुँचा !

- पृथ्वी हिलने लगी ...
- दुष्ट शक्तियों में भय समा गया
- परमेश्वर की उपस्थिति की महिमा से कब्र भर गई।
- यह इतना ज़बरदस्त था कि आस पास की कब्र भी खुल गईं और बहुत से संत जो मर गए थे, जीवित हो गए और यरूशलेम की सड़कों पर चले और बहुतों को दिखाई दिए। (मत्ती 27:51-53)
- और फिर वह कब्र पर आई स्त्रियों को (लूका 24:5-6), इम्माऊस के रास्ते पर दो को दिखाई दिया। वह कैफा को, फिर उन बारहों को दिखाई दिया। इसके बाद वह पाँच सौ

लोगों को एक साथ दिखाई दिया, फिर वह याकूब को, और सभी प्रेरितों को भी दिखाई दिया(1कुरि. 15:5-7)।

वह जी उठा है !!! यीशु मसीह जीवित है

- पाप को आधिकारिक और विधिवत रीति से क्षमा कर दिया गया।
- मृत्यु की सामर्थ्य, पाप को हटा दिया गया।
- पाप की मजदूरी को चूका दिया गया
- मृत्यु की सामर्थ्य को तोड़ दिया- वह परमेश्वर के पुत्र को और अधिक रोके नहीं रख सका!
- मृत्यु को पराजित कर दिया।
  पापों की क्षमा, मृत्यु की मृत्यु थी।
- शैतान अब शक्तिहीन था।

यीशु मसीह मुर्दों में से जी उठा
वह जीवित है

उन्होंने पुनरुत्थान के दिन - नए आरम्भ का अनुभव किया

यूहन्ना20:19-23 उसी दिन जो सप्ताह का पहला दिन था, संध्या के समय जब वहाँ के द्वार जहाँ चेले थे, यहूदियों के डर के मारे बन्द थे, तब यीशु आया और उनके बीच में खड़ा होकर उनसे कहा, “तुम्हें शान्ति मिले।” और यह कहकर उसने अपना हाथ और अपना पंजर उनको दिखाए। तब चेले प्रभु को देखकर आनंदित हुए। यीशु ने फिर उनसे कहा, “तुम्हें शांति मिले; जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ।” यह कहकर उसने उन पर फूँका और उनसे कहा, “पवित्र आत्मा लो।“

पुनरुत्थान के दिन शिष्यों का नया जन्म हुआ।

और जब हम यीशु मसीह पर विश्वास करते और उसे ग्रहण करते हैं, तब पुनरुत्थान के जीवन, अनंत जीवन के साथ हमारा नया जन्म होता है।

यूहन्ना11:25-26 यीशु ने उससे कहा, "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ; जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह यदि मर भी जाए तौभी जीएगा,और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है, **वह अनंतकाल तक न मरेगा।** क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?"

जहाँ भी शिष्य गए, उन्होंने पुनरुत्थान का प्रचार किया :

प्रेरितों के काम 2:24; 3:15; 4:2; रोमियों 1:4; 10:9

वह अल्फ़ा और ओमेगा है

वह जीवन का आरम्भ है

और वह मृत्यु का अंत भी है

इसलिये जैसा एक मनुष्य **के द्वारा पाप जगत में आया** और **पाप के द्वारा मृत्यु** आई, और इस रीति से **मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई**, क्योंकि सब ने पाप किया। रोमियों 5:12

और **जैसे आदम में सब मरते हैं**, वैसे ही **मसीह में सब जिलाए जाएंगे** **1** कुरिन्थियों 15:22

आदम अंत है - यीशु मसीह आरम्भ है !

1पतरस 1:3हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिसने यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से **हमें जीवित आशा के लिये नया जन्म दिया**,अर्थात् एक अविनाशी, और निर्मल, और अजर मीरास के लिये जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रखी है;जिनकी रक्षा परमेश्वर की सामर्थ्य से विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिये, जो अन्तिम समय में प्रगट होनेवाली है, की जाती है।

यीशु मसीह में हमारा एक नया आरम्भ है

हमारा नया जन्म हो सकता है!

यीशु हमारा आरम्भ है !

अतः उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से **जिलाया** गया, **वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें**। रोमियों 6:4

यीशु हमारा आरम्भ है : सम्पूर्ण अनंतता के लिए :

कुलुस्सियों1:18 वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है; **वही आदि है**, और **मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहलौठा** कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।

प्रकाशितवाक्य 1:8 प्रभु परमेश्वर, जो **है** और जो **था** और **जो आनेवाला है,** जो सर्वशक्तिमान है, यह कहता है, "मैं ही अल्फ़ा और ओमेगा हूँ।